मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा

मन के बहुत कुरंग हैं, छिन्न छिन्न बदले सोई,
एक ही रंग में जो रहे, ऐसा विरला कोई।

साधु भया तो क्या भया, माला पहरी चार,
बाहर भेस बनाया, भीतर भरा भंगार।

तन को जोगी सब करे, मन को करे न कोई,
सहजे सिद्धि पाईऐ, जो मन शीतल होई।

मन मैला तन उजरा बगुला कपटी अंग
ता सो तो कऊया भला, तन मन एक ही रंग

अरे नहाए धोए क्या भया, जो मन मैल न जाए,
मीन सदा जल में रहे, पर धोए वास न जाए।

मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा,
हो मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा ॥

*आस न मारी, मंदिर में बैठे ॥
नाम को छाड़ि, पूजन लागे पत्थरा,
मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा x॥

*कनवा फड़ाए जोगी, जटवा बढो ले ॥
दाढी बढ़ाई जोगी,हुआ बकरा,
मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा x॥

*जंगल जाए जोगी, धुनियाँ रमौले ॥
काम जराए जोगी, हुआ हिजरा,
मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा x॥

*मथवा मुंडाए जोगी, कपड़ा रंगईले ॥
गीता बांच के, हुआ लबरा,
मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा x॥

*कहत कबीरा, सुनो भाई साधो ॥
यम के दरवाजे, बाँध ले जाए पकरा,
मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपरा x॥
अपलोडर- अनिल रामूर्ति भोपाल

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/11366/title/mann-na-ragiye-rangiye-jogi-kpraa

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |